International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 12, Dec 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कमार जनजाति (छ.ग.) : समाज एवं अर्थव्यवस्था

डॉ. पी.एल. चन्द्राकर
डी.लिट.
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग
सी.एम.दुबे स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)

सामान्य परिचय :

कमार छत्तीसगढ़ राज्य की एक विशेष पिछड़ी जनजाति है। राज्य में इस जनजाति के लोग मुख्यतः गरियाबन्द, महासमुन्द और धमतरी जिले में निवास करती है।

सामाजिक आर्थिक दृष्टि से यह जनजाति अन्य जनजातियों की अपेक्षा अधिक पिछड़ी हुई है इसीलिए इन लोगों के विशिष्ट विकास के लिए सन् 1978 से 'कमार विकास प्राधिकरण गरियाबन्द का गठन किया गया है।

सन् 1971 की जनगणना के अनुसार कमारों की कुल जनसंख्या 27017 थी जो सन् 1981 की जनगणना में घटकर 15347 हो गयी थी। सन् 2011 की जनगणनानुसार प्रदेश में इनकी कुल 26530 थी। अतः अब इनकी जनसंख्या बढ़ रही (सारणी – 1) है। इस जनजाति की औसत साक्षरता दर 30 प्रतिशत है, जो प्रादेशिक एवं जनजातीय औसत से आधे से भी कम है। इस जनजाति समूह में प्रति हजार पुरूषों में स्त्रियों का औसत अनुपात 1029 थी।

अध्ययन क्षेत्र :

कमार जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर संभाग के अंतर्गत मुख्यतः गरियाबंद, धमतरी एवं महासमुंद जिले में निवास करती है। यह क्षेत्र 20' 6' उत्तरी अक्षांश से 20'38' उत्तरी अक्षांश तथा 82'0' पूर्वी देशान्तर से 82'6' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. कमार प्रदेश की विशेष पिछड़ी जनजातियां इनका विकास सन 1978 से कमार विकास प्राधिकरण के द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान समय मे इनकी सामाजिक, आर्थिक स्तर क्या है इसका आंकलन करना।
2. इस जनजाति की परम्पराएं नवाचार के मार्ग मे किस प्रकार बाधक है इसका पता लगाना।
3. 15 नवम्बर सन् 2023 से पी.एम.पी.वी.टी.डी. विकास मिशन की शुरूआत किया गया है। इसका लाभ इन्हें किस प्रकार मिल रहा है इसका आंकलन करना।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र प्रथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ा हेतु शोधकर्ता ने कमार के निवास क्षेत्र में जाकर उनकी सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का अवलोकन किया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 12, Dec 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

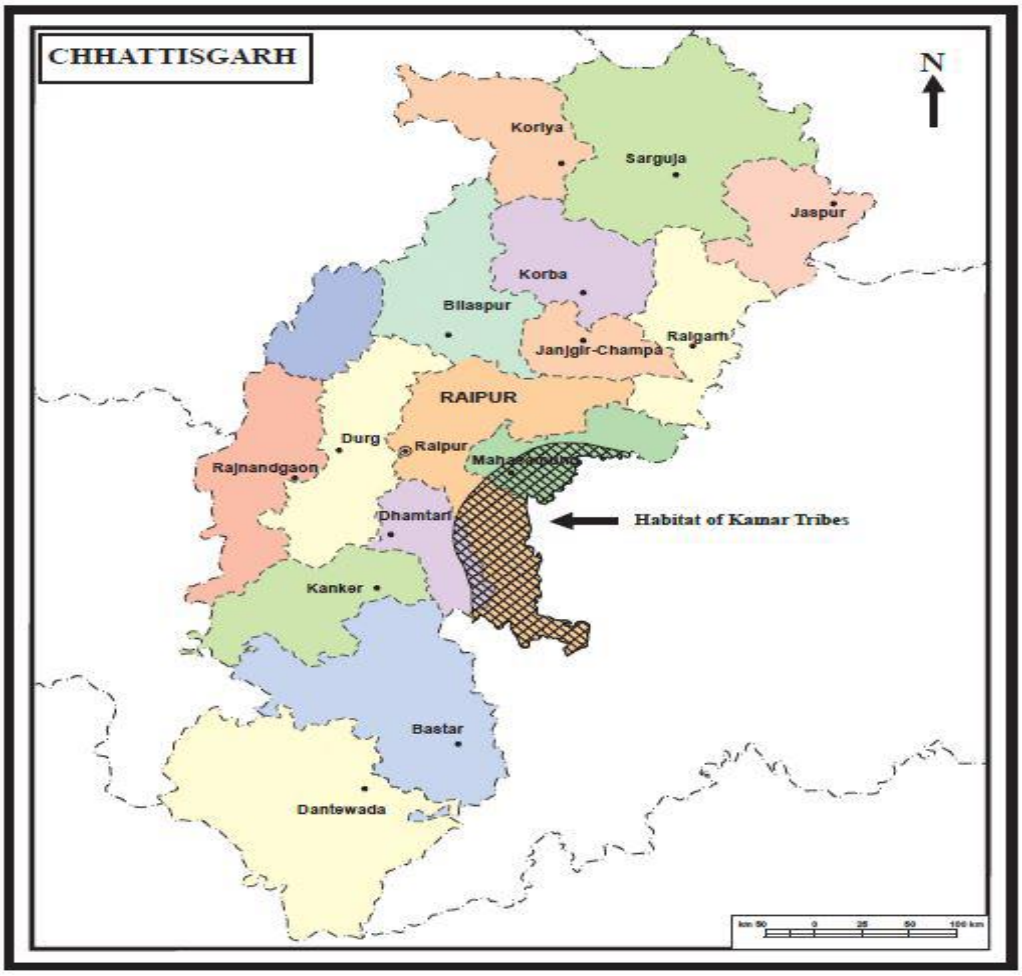

सारणी : 1

छत्तीसढ़ : कमार जनजाति की जनसंख्या वृद्धि दर, 1961–2011

क्रं.	दशक	जनसंख्या	वृद्धिदर % मे
1	1961	12537	–––
2	1971	27017	115.35
3	1981	15347	43.19
4	1991	17618	14.79
5	2001	23113	31.19
6	2011	26530	14.78

कमार जनजाति दो समूहों में विभक्त है, प्रथम एक पहाड़पटिया या मांकड़िया जो पहाड़ों में निवास करती है तथा दूसरा बुधरजिया या बुन्दरजीबा, जो मैदानी भाग में निवास करती है। बुधरजिया अपने आपको एक पहाड़ पटिया से उच्च मानते है। कनकार, कमलावंशी, तनवार, दूधकेंवर, पैंकरा इस जनजाति की उपशाखाएं है।

आवास :

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कुछ अंग्रेजी अध्येताओं ने कमारों की सामाजिक आर्थिक दशा का अध्ययन किये थे, तब उन्होने कमारों को अत्यधिक पिछड़ा हुआ और गुफाओं में रहने वाला बताया था। एम.ए. शेरिंग 1881 ने लिखा है कि कमार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 12, Dec 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जंगली उत्पाद पर जीवन यापन करते है उन्हें कृषि से शख्त नफरत है, जंगल में झोपड़ी बनाकर रहते है किन्तु गुफावास को पूर्णतः त्याग दिये है।

कमार जनजाति का घर झोपड़ीनुमा होता है, जिसमें एक या दो कमरा होता है। घर को ये लोग जंगली लकड़ी, बांस एवं घांस फूस से बनाते है। दूर से देखने पर कमार गांव इधर–उधर घरों का एक समूह दिखता है। इनका अधिकतर गांव जंगलों में पहाड़ियों पर अथवा उनके पास है। ये लोग अपने पालतू जानवर जैसे बैल, बकरी, सूअर इत्यादि के लिए पृथक घर बनाते है। आजकल प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ उठाकर पक्के मकानों में रहने लगे है।

व्यवसाय :

परम्परागत रूप से कमार जनजाति के लोग दहिया कृषि, वनोपज संग्रहण एवं शिकार द्वारा जीविकोपार्जन करते थे।

ये लोग दहिया कृषि ऐसी जगह पर करते थे जिनमें धान फसल की कृषि सम्भव नहीं होती थी। इस कृषि में ये लोग मोटे अनाज जैसे मड़िया, कोसरा, तिल, सरसों, उड़द, मक्का इत्यादि फसल उगाते थे।

दहिया कृषि पर प्रतिबन्ध होने के कारण अब ये लोग स्थायी कृषि करते है किन्तु वनोपज संग्रहण आज भी करते है।

इसके अलावा ये लोग बांस की टोकरी, मछली पकड़ने की जाली, चटाई, सूपा, माहुल पत्ते का दोना पत्तल, झाड़ू, झापी, धान के पुआल की कोठी, माहुल पत्ते की टोकनी, खुमरी इत्यादि बनाने में कुशल होते है जिनके उत्पादों को हाट बाजार में बेचकर आय प्राप्त करते है।

भोजन एवं पेय पदार्थ :

कमार लोग शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों होते हैं। ये लोग सूअर, खरगोस, चुहा, मछली इत्यादि का मांस खाते है इनको खरगोश एवं मछली खाना बेहद पसन्द है।

ये लोग ऋतुकाल के अनुरूप जंगली कन्दमूल, फल, पत्ती एकत्रित करते है और उनका भोज्य पदार्थ के रूप में उपयोग करते है। चूहे का शिकार इनके लिए मनोरंजन का साधन है। चुहा देखते ही इनके बच्चे दौड़ने लगते है। इसमें बड़े लोग भी सम्मिलित हो जाते है। पेय पदार्थ के रूप में ये लोग प्रायः महुआ का शराब पीते है।

सामाजिक व्यवस्था :

कमार परिवार पितृ सत्तात्मक होता है। पिता घर का मुखिया होता है। ये लोग संयुक्त परिवार में नहीं रहते है। विवाह के पश्चात् पुत्र अपने पिता के घर के आस–पास अलग झोपड़ी बनाकर रहता है।

इनमें समगोत्रीय विवाह वर्जित है किन्तु मामा–बुआ के लड़के लड़की के विवाह को ये लोग सबसे अच्छा मानते है। इनमें विवाह करने वाले लड़का पक्ष वधू मूल्य देता है। मंगनी विवाह पैठू विवाह, गुरावट विवाह, उघरिया विवाह, विधवा परित्यक्तता का पुर्नविवाह इत्यादि प्रकार के विवाहों का कमार जनजाति में प्रचलन है।

कमारों में मृतयु होने पर मृतक को दफनाया जाता है। तेरहवें दिन मृत्यु भोज दिया जाता है। घर में किसी की मृत्यु होने पर पुराना घर तोड़कर या जलाकर नया घर बनाते है। प्रसव के दौरान महिलाओं को मुख्य घर से पृथक स्थान पर रखते

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 12, Dec 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। कन्या के जन्म से डेढ़ माह और पुत्र के जन्म से दो माह तक प्रसूता अपवित्र रहती है। हिन्दू परिवारों से भिन्न ये लोग मृतक का पितर–मिलौनी, होली पर्व में करते है।

यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु जंगली जानवर के कारण होती है तो उसके लाश को घर नहीं लाते उसे उसी स्थान पर गड़ा देते हैं। गर्भवती या प्रसूता औरत की मृत्यु होने पर ये लोग उसे मिट्टी में दफनाने के बाद उसके उपर काटा का ढेर रखते है ताकि वह भूत बनकर सताये न। शिशुओं की छठी से पहले मृत्यु हो जाती है तो उसको दफनाने का काम महिलाएं करती है।

कमार जनजाति में वर वधू के विवाह में वर के घर में बने मंडप मे चिखलाही का नेग होता है जिसमें महिलाएं मंडप के ऊपर से चार–पांच घड़े पानी वर वधू के उपर डालती है। मंडप किचड़मय हो जाता है जिसमें उपस्थित लोग लोटपोटकर मस्त होकर नाचते है। इसके बाद गांव के तालाब या नदी में वर वधू को पनबुड़ी का खेल खेलाते है।

इनमें लड़का का नाल तीर से तथा लड़की का नाल बांस की चिपा (कहरा) से काटा जाता है। कमार जनजाति में घोड़े को छूना निषिद्ध माना जाता है।

वस्त्र आभूषण :

कमार जनजाति में महिलाओं को गोदना गोदवाना अनिवार्य है। गरीबी के कारण इनके पास ऋतुकाल के अनुरूप वस्त्रों का अभाव रहता है। ठण्डे के दिनों में ये लोग आग जलाकर ठण्डी दूर करते है।

कमार स्त्रियां गहना प्रिय हैं। पारम्परिक रूप से हाथ, पैर, कमर, नाक, सिर एवं गले में विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनना पसंद करती है। इनका आभूषण प्रायः सस्ती धातु का बना होता है।

देवी–देवता एवं पर्व उत्सव :

कमारों का धार्मिक जीवन आदिम है। इस जनजाति के प्रमुख देवी देवता बान्हन देव, भीमा देव, मुरमाटी (पितृ देव) गाता डूमा (फूल देव) करियापाल बस्तारिन माता नरवाली बड़े लालिन, छोटे लालिन है जिनको समय समय पर बकरा व मूर्गा बलि चढ़ाते है।

इस जनजाति के लोग हरेली, नवाखानी, दशहरा, दिवाली, छेरछेरा, होली, नांगपंचमी आदि पर्वो को मानते है। 'जात्रा' इनका प्रमुख पर्व जिसे अगहन पूर्णिमा (दिसम्बर) के दिन में मनाया जाता है। यह पर्व धान के भरपूर फसल होने पर मनाया जाता है।

कर्मा, सुआ, ददरिया इस जनजाति के प्रमुख नृत्य हैं। ये लोग झाड़–फूंक एवं भूत–प्रेत में विश्वास करते है।

निष्कर्ष :

शासन द्वारा कमार जनजाति का सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विकास निरन्तर किया जा रहा है फलतः कमार लोग आदिम अवस्था को छोड़कर धीरे–धीरे सभ्य समाज के साथ जुड़ते जा रहे है। किन्तु ये लोग आज भी अन्धविश्वासी एवं परम्परावादी है इसीलिए इनका सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर पिछड़ा हुआ है।

मद्यपान, कुपोषण, दूर–दूर बिखरा बसाहट झाड़फूंक, जादू–टोना पर विश्वास इत्यादि इनके विकास के मार्ग में प्रमुख बाधक कारक है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 12, Dec 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रंथ

Dube S.C. (1951) : The Kamar Lucknow (U.P.) Universal Publishers

Tiwari D.N. (1984) : Primitive Tribes of Madhya Pradesh Govt. India Press Faridabad.

दुबे श्यामाचरण (1951) : द कमार, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

Russel R. N. Hira Lal (1993) : The tribes and Custes of the Central Provinces of India.

तिवारी एस. के. शर्मा (1994) : मध्यप्रदेश की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था

श्री कमल म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल

तिवारी विजय कुमार (2001) :छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ हिमालया पब्लिशिंग हाउस मुम्बई

त्रिपाठी कौशलेन्द्र चन्द्राकर (2012) :छत्तीसगढ़ एटलस एस शारदा पब्लिकेशन, बिलासपुर पुरूषोत्तम(छ.ग.)

Census of India (1961-2011) : District Census Hand Books and Chhattisgarh Series.

निरगुणे बसन्त (2004) : आदिवर्त छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियाँ महावीर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स इन्दौर (म.प्र.)

हसनैन नदीम (1997) : जनजातीय भारत जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

नई दिल्ली।